दृष्टिहीन बच्चियों की सेवा ही धर्म बनाया

ब्रजकिशोर बालिका विद्यालय की प्राचार्य नीलू वर्मा ने कई निःशक्त लड़कियों को बनाया आत्मनिर्भर

लता रानी ● रांची

नीलू वर्मा उस शख्सियत का नाम है, जिन्होंने अपना जीवन दृष्टिहीन बालिकाओं के लिए समर्पित कर दिया है. नीलू को इन निःशक्त लड़कियों से ऐसा लगाव है कि वो अपनी उम्र को इनकी सेवा करने से रोक नहीं पातीं और लगातार 20 साल से नेत्रहीन बालिकाओं की सेवा कर रही हैं. वे दृष्टिहीन बच्चियों के लिए रांची के [illegible] गांव में ब्रजकिशोर नेत्रहीन विद्यालय चला रही हैं. यह गौरव की बात है कि नीलू के निर्देशन में झारखंड का यह पहला व एकमात्र स्कूल है, जहां 12 वीं कक्षा तक पढ़ाई होती है. यही नहीं यहां की छात्राओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए कई तरह के प्रशिक्षण भी दिये जाते हैं. बच्चियों को कंप्यूटर की शिक्षा भी दी जा रही है.

ब्रजकिशोर नेत्रहीन बालिका विद्यालय की छात्राओं व शिक्षिकाओं के साथ प्राचार्य नीलू वर्मा.

कैसे आया स्कूल का ख्याल

नीलू बताती हैं कि बरियातू में ब्लाइंड ब्वॉयज स्कूल देख मुझे लगता था कि दृष्टिहीन लड़कियों के लिए भी अलग स्कूल होना चाहिए. फिर मात्र दो बच्चियों के साथ मैंने स्कूल की स्थापना की. यह कारवां बढ़ता ही गया और मुझे धीरे-धीरे मंजिल मिल ही गयी. आज मैं इस स्कूल की प्राचार्य सह निदेशिका हूं, और यहां की बच्चियां पढ़-लिखकर अपने पैरों पर खड़ी हो रही हैं. नीलू कहती हैं कि इस स्कूल की खास बात यह है कि यहां की छात्राएं नॉर्मल एकेडमिक स्कूल में कक्षा कर सकती हैं, जहां इंटीग्रेटेड सिस्टम (समावेशी शिक्षा) के जरिये नॉर्मल बच्चों के साथ उन्हें बैठकर पढ़ने व ज्ञान प्राप्त करने का मौका मिलता है. नीलू वर्मा ने मैट्रिक से शुरुआती शिक्षा के बाद एमए तक की पढ़ाई इलाहाबाद प्रयाग संगीत समिति से की है. वे अपनी छात्राओं को भी स्वयं संगीत की शिक्षा देती हैं. दृष्टिहीन बच्चों को पढ़ाना बहुत मुश्किल होता है, लेकिन उन्होंने इस चुनौती को हंसते-हंसते स्वीकारा. उन्होंने बताया कि शहर में तो स्पेशल स्कूल होते ही हैं, पर गांव में जरूरत है शिक्षा के ऐसे आयाम की, जिसे वह गांव-गांव तक फैला रही हैं.

है हॉस्टल की सुविधा भी

दृष्टिहीन लड़कियों के रहने के लिए हॉस्टल की सुविधा भी है. यहां झारखंड के बुंडू, तमाड़, [illegible] सहित रांची के आस-पास के गांवों की लड़कियां शिक्षा लेकर आत्म निर्भर बन रही हैं. इन्हें पढ़ाने और प्रशिक्षण देने के लिए चार शिक्षिकाएं भी सेवा में लगी हुई हैं.

कौन-कौन हैं सहयोगी

'[illegible] इंडिया', इन छात्राओं की मदद के लिए तत्पर है. ये छात्राओं को कंप्यूटर सीखने के लिए खास तौर पर प्रोत्साहित कर रहा है. यह स्कूल ही [illegible] व कुछ लोगों की मदद से चल रहा है. इसके अलावा [illegible] भी छात्राओं को पढ़ने में विशेष सहयोग दे रहा है. बहुत से लोगों के व्यक्तिगत सहयोग से भी छात्राओं की शिक्षा पूरी हो रही है.

क्या-क्या सीख रही हैं बच्चियां

स्कूल की लड़कियों को आत्मनिर्भर बनाने के लिए वोकेशनल ट्रेनिंग जरूरी है, इसलिए कई तरह के प्रशिक्षण की परिसर में ही व्यवस्था है. छात्राओं को साबुन, मोमबत्ती, फ्लावर पॉट, पॉट होल्डर आदि बनाने की ट्रेनिंग भी जाती है. बना रही हैं. इसके अलावा छात्राएं बुनाई भी करती हैं. संगीत के साथ साथ हारमोनियम और तबला बजाने का प्रशिक्षण भी दिया जाता है.

नीलू को नवाजा नैब ने

'नेशनल एसोसिएशन फॉर ब्लाइंड्स [illegible]' ने इस काम के लिए सम्मानित किया.

कहती हैं नीलू वर्मा

स्कूल लड़कियों को आत्मनिर्भर बनाने का प्रयास कर रही हूं. यहां की कई बेटियों का विवाह भी हमने मिलजुल कर कराया. उनका घर बस जाने से मुझे अजीब सी खुशी मिलती है. मैं चाहती हूं ये लड़कियां आत्मनिर्भर बनें. इन्हें आत्मनिर्भर बनाने का लगातार प्रयास कर भी रही हूं. इन्हें जॉब मिले और ये सेटल हो जायें, मेरी बस यही तमन्ना रहती है. यहां से शिक्षा लेकर मेरी बच्चियां देहरादून, दिल्ली व बनारस जैसे शहरों में काम कर रही हैं. इससे मुझे बहुत खुशी मिलती है. तब लगता है मैंने सबकुछ पा लिया. मेरे लिए यहां की नेत्रहीन बेटियां भी सामान्य बच्चों की तरह ही हैं... और ये किसी से कम भी नहीं हैं.